13

पाप की नगरी में कलीसिया

(2:12-17)

पिरगमुन की कलीसिया को ''विश्वासी कलीसिया जो अविश्वासी थी,'' ''नरक के मु यालय वाली कलीसिया,'' और ''शैतान के पीछे के आंगन वाली कलीसिया'' कहा गया है। ''पाप की नगरी वाली कलीसिया'' शीर्षक में मैंने इसकी विशेष चुनौतियों को संक्षिप्त करने का प्रयास किया है।

एक नगर जिसे मसीह की आवश्यकता थी (2:12)

इस मण्डली के नाम पत्र का परिचय इन शब्दों से दिया गया है: ''और पिरगमुन[1] की कलीसिया के दूत को यह लिख, ...'' (आयत 12)।

नगर का नाम

हम पश्चिमी तट की ओर जा रहे हैं।[2] हम इफिसुस से आर भ करके स्मुरने तक गए थे। अब हम आसिया के रोमी क्षेत्र की राजधानी पिरगमुन से साठ मील के लगभग आगे निकल आए हैं। इफिसुस और स्मुरने के विपरीत पिरगमुन समुद्र के किनारे नहीं बल्कि शुष्क भूमि पर लगभग पन्द्रह मील दूर था।

पिरगमुन पहाड़ पर बसा था और नीचे मैदान तक फैला हुआ था। आज बरगामा का आधुनिक नगर प्राचीन नगर के निचले भाग तक फैला हुआ है। एक यात्री दल के साथ जाने पर मैंने पहले अक्रोपोलिस का दौरा किया,[3] फिर बरगामा नगर के पुरातात्विक स्थल का और अन्त में प्राचीन चिकित्सकीय प्रांगण के खण्डहरों को देखने के लिए हम नगर के दक्षिण में गए।

हमें नहीं मालूम कि पिरगुमन में प्रभु की कलीसिया कब स्थापित हुई थी। आसिया की अन्य मण्डलियों की तरह यह स भवतया इफिसुस में पौलुस के तीन वर्ष रहने के दौरान स्थापित हुई (प्रेरितों 19:10)। हमें नहीं मालूम कि इस मण्डली को कौन सी विशेष समस्याओं का सामना करना पड़ा। यीशु ने पिरगमुन को वह स्थान कहा, ''जहां शैतान का सिंहासन है'' और ''जहां शैतान रहता है'' (2:13)। इस नगर को मसीह की बहुत ही

आवश्यकता थी।

मसीह का विवरण

उस धमकाने वाले स्थान में मसीह लोगों को प्रभु की सामर्थ का आश्वासन देना आवश्यक था। इसलिए यीशु ने अपने आप को ''जिसके पास दो धारी और चोखी तलवार है'' (आयत 12ख) के रूप में वर्णित किया। (दीवटों के बीच चलते हुए यीशु का दर्शन का चित्र देख)

परमेश्वर के वचन को तलवार कहा गया है (इब्रानियों 4:12; इफिसियों 6:17) और यह तलवार यीशु के मुंह से निकली है (1:16; 2:16), जिस कारण अधिकतर लोग इस बात से सहमत हैं कि यह परमेश्वर के वचन को ही कहा गया है, परन्तु हमें समझना चाहिए कि यह वचन सुसमाचार नहीं, बल्कि अपने शत्रुओं पर प्रभु का न्याय है (यशायाह 49:2; प्रकाशितवाक्य 19:15, 21)।

तलवार का इस्तेमाल रचनात्मक या विनाशक हो सकता है और वचन का इस्तेमाल भी ऐसे ही हो सकता है। कुशल सर्जन (डॉक्टर) के हाथ में चीर-फाड़ करने वाली छुरी होने की तरह वचन की तलवार हृदय को चंगाई के लिए खोल सकती है (प्रेरितों 2:37; इब्रानियों 4:12)। अन्य परिस्थितियों में इसे न्याय के परमेश्वर के औज़ार के रूप में चलाया जा सकता है (यूहन्ना 12:48)। प्रकाशितवाक्य 2 में यीशु के दिमाग़ में इसका बाद वाला उपयोग था (आयत 16)।

यीशु पिरगमुन के मसीह लोगों को बताना चाहता था कि रोम की सामर्थ उसकी सामर्थ से बड़ी नहीं है। उसकी अजेय तलवार की तुलना में रोमियों की तलवारें बच्चों के बनाए हुए लकड़ी के खिलौने के हथियार थे। इसलिए मसीही, लोगों को रोम के हथियारों से न डरने के लिए कहा। उन्हें केवल न्याय की प्रभु की तलवार से डरना चाहिए (2:16)।

एक नगर जिसने शैतान को सिंहासन पर बिठाया था (2:13)

पिरगमुन के नाम पत्र का मु य भाग यीशु द्वारा मण्डली की सराहना से आर भ होता है।

जहां शैतान सिंहासन पर बैठा था

पहले तो उसने उन्हें आश्वस्त किया कि उसे मालूम है कि उनके सामने बहुत बड़ी चुनौती है: ''मैं यह तो जानता हूं, कि तू वहां रहता है,[4] जहां शैतान का सिंहासन है[5] और ... जहां शैतान रहता है'' (आयत 13)। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में कई तुलनाएं हैं। एक तुलना परमेश्वर के सिंहासन और शैतान के सिंहासन में है। 4 और 5 अध्यायों में हम परमेश्वर के सिंहासन को पूरी महिमा में देखेंगे। उससे पहले अध्याय 2 में हमें पता चलता है कि शैतान के भी अपने सिंहासन अर्थात शक्ति और प्रभाव के अपने केन्द्र हैं। पिरगमुन एक ऐसा ही केन्द्र था।

टीकाकार यह बताने और सफ़ाई देने के लिए कि उन्हें क्या लगता है कि ''शैतान का

सिंहासन'' कैसा होगा कई-कई पन्ने भर देते हैं, परन्तु कंपकंपी लगा देने के लिए यह शब्द ही काफ़ी है। यह वह नगर था, जहां शैतानी लोगों ने मंच स भाला हुआ था। यह वह नगर था, जहां शैतान लोग मंच स भाले हुए थे।

यीशु के संदेश को समझने के लिए यह पहचानना आवश्यक नहीं है कि शैतान का सिंहासन क्या है, परन्तु पिरगमुन के मसीह लोगों के सामने आने वाली रुकावटों पर विचार करके हम लाभान्वित हो सकते हैं।

शैतान राजनैतिक रूप से सिंहासन पर था। पिरगमुन के रोम के साथ बड़े मज़बूत स बन्ध थे। यह इलाके में पहला नगर था, जिसे राजकीय मन्दिर बनाने का अधिकार मिला था। आज मैदान पर खड़े होकर जब आप अक्रोपुलिस को देखते हैं तो सम्राट ट्राजन को समर्पित सफ़ेद संगमरमर के नये सिरे से बनी सबसे प्रभावशाली इमारत मिलती है। पिरगमुन थ्राइस नियोकोरुस कहलाने[6] में गर्व महसूस करता था, जो यह दिखाता शीर्षक था कि उसे सम्राटों को महिमा देते तीन मन्दिर बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

पिरगमुन पूर्व में रोम का गढ़ था। यह एशिया में रोमी साम्राज्य का केन्द्र था और सम्राट की पूजा करवाने की ज़ि मेदारी इसी पर थी। सरकारी गर्व ही लोगों को सम्राट के राजा के भगवान मानने के लिए हर नागरिक पर दबाव बनाने के लिए काफ़ी था।[7]

शैतान धार्मिक रूप से सिंहासन पर बैठा था। राजाओं को समर्पित मन्दिरों के अलावा पिरगमुन अन्य धार्मिक ढांचों से भी भरा था।[8] उदाहरण के लिए अक्रोपोलिस की एक विशेषता ज्यूस की वेदी थी, जिसे बहुत से लोग प्राचीन जगत के सात अजूबों में से एक मानते हैं।

ज़्यूस[9] को यूनानियों और रोमियों द्वारा देवताओं में प्रमुख माना जाता था। एक बहुत बड़ी विजय के बाद पिरगमुन के राजा ने ज्यूस के प्रति अपनी श्रद्धा दिखाने के लिए एक विशालकाय वेदी बनाने की आज्ञा दी थी। स पूर्ण ढांचा 120 फुट ल बा, 112 फुट चौड़ा और 20 फुट ऊंचा था।[10] दीवारों पर अपने शत्रुओं पर रोमी देवताओं की विजय को दिखाता एक चित्र था। नक्काशी के इस भित्ति चित्र को कला का बेहतरीन नमूना माना जाता था।

मूर्तियों की पूजा का एक और चौंकाने वाला उदाहरण बगामा नगर के बीच में देखा जा सकता है, जहां मिसरी देवताओं के लिए बने मन्दिर के अवशेष रखे गए हैं। बड़ी लाल ईंटों वाली दीवारें साठ फुट से भी ऊंची हैं।

शैतान के साथ अधिक निकटता से जुड़ी मूर्ति पूजा नगर के दक्षिण में चिकित्सकीय प्रांगण में थी। बीमार लोग चंगाई के लिए इस प्रसिद्ध केन्द्र में दूर-दूर से आते थे। प्रसिद्ध चिकित्सक गेलन (130-200 ईस्वी) ने बाद में अपना काम यहीं किया।[11] यहां किया जाने वाला उपचार मूर्ति पूजा के रहस्यवाद[12] और चिकित्सा का मिश्रण था।[13]

एक ल बे मार्ग से जिसे ''पवित्र मार्ग'' कहा जाता था, पहुंचने पर सुविधाएं मिलती थीं और हैं। चंगाई पाने के इच्छुक लोग इस विश्वास से कि मृत्यु को पीछे छोड़ रहे हैं, नंगे पांव चलकर आते हैं। प्रवेश द्वार पर चंगाई के यूनानी और रोमी देवता एस्कूलेपियुस[14] को समर्पित वेदी है। इस वेदी पर इस देवता का झंडा प्रसिद्ध है: लिपटा हुआ सांप,[15] जो

अधिकतर यहूदी और मसीही लोगों के मन में शैतान से स बन्धित है (उत्पत्ति 3:1-24; प्रकाशितवाक्य 12:9; 20:2)। एस्कूलेपियुस की पूजा आर्भक मसीहियों के लिए विशेष तौर पर घृणाजनक थी।

शैतान सांस्कृतिक रूप से सिंहासन पर बैठा है। पिरगमुन तटीय नगर नहीं था, जिस कारण यह व्यापार के क्षेत्र में इफिसुस और स्मुरने से मुकाबला नहीं कर सकता था, सो इसे संस्कृति में महारत हासिल थी। ''[इसके] कवियों, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों और विद्वानों के कारण पिरगमुन की प्रतिष्ठा अथेने और सिकन्दरिया जैसी थी।''[16]

पिरगमुन के प्रसिद्ध चिकित्सकों और ज्यूस की वेदी की कारीगरी के अलावा एक और सांस्कृतिक उपलब्धि पिरगमुन का पुस्तकालय था। इसमें 2,00,000 पुस्तकें थीं और यह मिस्र में ''सिकन्दरिया जितना महत्वपूर्ण''[17] था। सिकन्दरिया से इस मुकाबले में दो महत्वपूर्ण प्राप्तियां हुई थीं: (1) मिस्र के राजा ने जो असिया के पुस्तकालय से ईर्ष्या रखता था एशिया में पेपिरस[18] भेजने से इनकार कर दिया था। इससे पिरगमुन के लेखकों को लेखन सामग्री के रूप में चमड़े के इस्तेमाल के प्राचीन ढंग की शरण लेनी पड़ी थी। कारीगर पार्चमैंट (चरमपत्र, के लिए ''पिरगमुन'' से लिया गया नाम)[19] में महारत हासिल करने तक प्रयोग करते रहते थे। (2) चरमपत्र पेपिरस की तरह सफाई से इकट्ठे नहीं होते थे, जिस कारण पृष्ठों वाली पुस्तकें पार परिक पत्रियों की जगह बनाई जाती थीं।[20]

पिरगमुन की संस्कृति केवल बुद्धिजीवियों को ही आकर्षित नहीं करती थी। इसका सबसे दर्शनीय स्थल 10,000 सीटों वाला फैन के आकार का थियेटर था, जो अक्रोपोलिस के दक्षिण-पश्चिम में तीखी ढलान पर बना था। जब मेरा यात्री दल अठहत्तर कतारों वाली सीटों की सबसे ऊंची कतार पर खड़ा था तो मंच में देखना सिर चकराने वाला था। हमारे बिल्कुल सामने पहाड़ की शानदार चोटियां थीं। बाईं ओर नीचे को बरगामा नगर था। ऊपर केवल आकाश, सूरज और बादल थे।

पुस्तकालय, थियेटर और अन्य सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का पिरगमुन के शैतान का निवास होने से क्या स बन्ध था? स्पष्टतया बुद्धिजीवी और कलाकार सम्राट अर्थात एक मूर्तियों के देवता या दोनों से जुड़े थे। थियेटर में होने वाले कार्यक्रम शराब के देवता डायोनिसुस के स मान में होने वाले जश्नों का भाग थे। डायोनिसुस के मन्दिर के खण्डहरों को आज भी मंच के क्षेत्र के उत्तरी सिरे में देखा जा सकता है।

शैतान नैतिक रूप से सिंहासन पर बैठा था। अनैतिकता, विशेषकर अनैतिकता पिरगमुन की राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का अभिन्न अंग थी। उस नगर के लोग ''व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, ... मतवालापन और लीलाक्रीड़ा'' जैसे ''शरीर के कामों'' में निपुण थे (गलातियों 5:19-21क)।

जैसे-जैसे मुझे पिरगमुन का पता चलता है, वैसे-वैसे मैं लेमार बैरट से सहमत होता हूं। ज्यूस की वेदी की बात करते हुए उसने लिखा है, ''शैतान का सिंहासन स भवतया यह वेदी नहीं, *बल्कि पिरगुमम नगर ही होगा* ''[21] शैतान इसके लोगों के मनों, हृदयों और जीवनों में राज कर रहा था।

क्या शैतान के आज भी ऐसे केन्द्र हैं, जो हज़ारों लोगों की सोच को बदल देते हैं। जहां वह, वह बात रखता है, जो बेईमान, दोष ढूंढ़ने वाले और भोगियों को आकर्षित करती है? शैतान के प्रभावित करने वाले ऐसे कई संसाधनों का ध्यान आता है: संसार के प्रमुख नगर, राजनैतिक शक्ति के केन्द्र, कामुक भोग-विलास को समर्पित क्षेत्र, सांसारिक विश्वविद्यालयों के प्रांगण।[22] इनमें हम मीडिया को भी शामिल कर सकते हैं: पुस्तकें, फिल्में और टैलीविज़न।[23] शैतान आज भी शक्ति वाली अपनी गद्दी पर बैठा है, जहां से वह संसार तक पहुंचता है!

जहां चेले खतरे में थे

अब हमें इस कलीसिया को यीशु की प्रशंसा को समझाने के लिए तैयार हो जाना चाहिए: ''मैं यह तो जानता हूं, कि तू वहां रहता है, जहां शैतान का सिंहासन है, और मेरे नाम पर स्थिर रहता है; और मुझ पर विश्वास करने से उन दिनों में भी पीछे नहीं हटा'' (आयत 13क, ख)। सहानुभूति रहित लोगों के बावजूद पिरगमुन के मसीही लोग विश्वास में दृढ़ रहे थे!

उन्होंने न केवल यीशु को पकड़े रखा था, बल्कि उसकी बातें भी उन्होंने नहीं छोड़ी थीं। आम तौर पर ''विश्वास'' के लिए यूनानी शब्द से पहले आने वाले निश्चयात्मक उपपद से ''यीशु में विश्वास पर केन्द्रित शिक्षा'' अन्य शब्दों में मसीह के स पूर्ण नये नियम का संकेत मिलता है।[24] यीशु और उसकी शिक्षा में उनका पूर्ण विश्वास था।

इसके अलावा वे मृत्यु की धमकी मिलने के बावजूद विश्वासी रहे थे: ''जिन में तेरा विश्वासयोग्य साक्षी अन्तिपास,[25] तुम में उस स्थान पर घात किया गया[26] जहां शैतान रहता है'' (आयत 13ग, घ)। स्मुरने की मण्डली को चेतावनी दी गई थी, ''देखो, शैतान तुम में से कितनों को जेलखाने में डालने पर है, ताकि तुम परखे जाओ'' (2:10ख)। स्मुरने के मसीही लोगों के लिए इससे भी बुरा समय तो अभी आने वाला था, परन्तु शैतान ने पिरगमुन में तैयारी कर ली थी। उस नगर में पहला मसीही मर गया था।

हमें नहीं मालूम कि अन्तिपास कौन था, परन्तु प्र ा को मालूम है। हमें नहीं मालूम कि वह जवान था या बूढ़ा, विवाहित था या कुंवारा, सफल था या असफल (संसार के विचार से); परन्तु हम इतना जानते हैं कि यीशु ने उसे ''मेरा विश्वासयोग्य साक्षी'' कहा। अन्त में सबसे बड़ी बात यही है।

एक नगर जिसने कलीसिया को प्रभावित किया (2:14, 15)

काश यह पत्र यहीं समाप्त हो जाता, परन्तु आयत 14 इन उदास करने वाले शब्दों से आर भ होती है ''पर मुझे तेरे विरुद्ध कुछ बातें कहनी हैं।'' जब यीशु को ''तेरे विरुद्ध कुछ बातें कहनी'' हों, तो यह समय उदास होने का ही है! 1961 में मैंने एक व्यक्ति का जनाज़ा पढ़ा था, जिसने चूहे का ज़हर खा लिया था। चूहे का ज़हर मु यतया संखिया के कुछ ही दानों के साथ अनाज का भोजन था, परन्तु वह आदमी मर गया।[27]

पिरगमुन के मसीही लोगों के विरुद्ध प्रभु को ''कुछ बातें'' क्या कहनी थीं?

> ... तेरे यहां कितने तो ऐसे हैं, जो बिलाम की शिक्षा को मानते हैं, जिस ने बालाक को इस्राएलियों के आगे ठोकर का कारण[28] रखना सिखाया, कि वे मूर्तों के बलिदान खाएं,[29] और व्यभिचार करें।[30] वैसे ही तेरे यहां कितने तो ऐसे हैं, जो नीकुलइयों की शिक्षा को मानते हैं'' (आयत 14ख, 15)

पिरगमुन के मसीही लोगों ने स्पष्टतया अपने बीच में गलत शिक्षा देने वालों को अनुमति देकर उन्हें रुकने दिया था। यीशु ने इफिसुस की कलीसिया की झूठे शिक्षकों को *सहने* के कारण *सराहना* की थी; अब उसने पिरगमुन की कलीसिया की इसे *सहने* के कारण *निन्दा* की।

लोग जिन्होंने समझौते का प्रचार किया

यीशु ने किन झूठे शिक्षकों की बात की थी? ''बिलाम की शिक्षा'' और ''नीकुलइयों की शिक्षा'' पदनाम स भवतया एक ही शैतानी संदेश को कहने के दो ढंग हैं।[31] उत्पादक कई बार एक ही वस्तु बनाकर उस पर दो अलग-अलग नाम लिख देते हैं। ऐसे ही शैतान ने निंदनीय शिक्षा पैदा की थी, जो कई नामों से वितरित हुई थी।

''बिलाम की शिक्षा'' के बारे में जानने के लिए गिनती की पुस्तक के 22 से 25 अध्यायों में बालाक और बिलाम के वृत्तांत से आर भ करें: बालाक ने बिलाम को पेशकश की कि यदि वह इस्राएलियों को श्राप दे तो वह उसे बहुत बड़ा इनाम देगा, परन्तु वह ऐसा नहीं कर पाया। यह जानने के लिए कि इसके बाद क्या हुआ, आपको बाइबल के अन्य भागों में जाना पड़ेगा: बालाक द्वारा पेश किए धन को कमाने के लिए (2 पतरस 2:15; यहूदा 11) बिलाम ने एक दुष्ट योजना बनाई। या यूं कहें कि उसने बालाक से कहा, ''मैं इस्राएलियों को श्राप नहीं दे सकता, परन्तु यदि तू अपनी स्त्रियों का इस्तेमाल उनके पुरुषों को मूर्तियों की पूजा और शारीरिक अनैतिकता में लाने के लिए करे तो परमेश्वर स्वयं उन्हें श्राप देगा।'' बालाक ने बिलाम की सलाह मान ली और परिणामस्वरूप परमेश्वर ने 24,000 इस्राएलियों को महामारी से मार डाला (गिनती 25)।[32] बाद में मूसा ने लिखा कि यह *''बिलाम की स मति से''* था कि मूर्ति पूजक की स्त्रियों के द्वारा ''इस्राएलियों से यहोवा का विश्वासघात ... कराया'' (गिनती 31:16क)।[33] पिरगमुन में, कोई संदेह नहीं कि ''बिलामियों'' ने यह सिखाया था कि मसीही लोगों को नगर की मूर्तिपूजक संस्कृति में अपने आप को मिला लेने में कोई बुराई नहीं है।

इफिसुस की कलीसिया के नाम पत्र के अपने अध्ययन में हम नीकुलइयों की शिक्षा को देख चुके हैं (2:6)।[34] मसीही लेखकों ने नीकुलइयों को अनैतिकता का व्यवहार करने वाले नौस्टिक समूह से मिलाया है। ''Gnostic'' ''ज्ञान'' के लिए यूनानी शब्द (*gnosis*) से लिया गया है। नौस्टिक लोगों का दावा है कि उन्हें वह ज्ञान और भेद मालूम है, जो दूसरों पर प्रकट नहीं है। एक प्रसिद्ध नौस्टिक शिक्षा यह थी कि परमेश्वर के लोग जो पाप चाहें

कर सकते हैं और परमेश्वर का अनुग्रह फिर भी उसके पाप को ढक लेगा, चाहे वह मन फिराये या न। इस प्रकार उन्होंने ''हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल'' डाला (यहूदा 4)।[35]

बिलाम और नीकुलइयों की शिक्षा दोनों ही गलत हैं, जो परमेश्वर के लोगों को पाप के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

सदस्य जो समझौते वाला जीवन बिताते थे

नया नियम इस पर बहुत स्पष्ट है कि झूठे शिक्षकों के साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए: पौलुस ने उनकी शिक्षा पर नज़र रखने और ''उनसे दूर'' रहने के लिए कहा (रोमियों 16:17)। उसने मसीह लोगों से कहा कि ''तुम हर एक ऐसे भाई से अलग रहो जो अनुचित चाल चलता और जो शिक्षा [परमेश्वर की प्रेरणा से मिली] उसने हम से पाई उसके अनुसार नहीं करता'' (2 थिस्सलुनीकियों 3:6)। यूहन्ना ने तो यहां तक कहा कि यदि कोई गलत शिक्षा देने वाले को प्रोत्साहित करता है तो ''वह उस के बुरे कामों में साझी होता है'' (2 यूहन्ना 11)।

पिरगमुन के मसीही लोगों ने इन स्पष्ट निर्देशों को क्यों नहीं माना था? क्योंकि वे शायद झूठे शिक्षकों की मित्र मण्डली में थे और अगुओं को डर था कि यदि उन पर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाती है तो वे कलीसिया में गड़बड़ी कर सकते हैं। हो सकता है कि सदस्यों को लगता हो कि विरोधी संसार के सामने अपने आप को एक दिखाने के लिए आवश्यक था, चाहे उन्हें गलत शिक्षा को ही सहारना पड़े। शायद उन्हें लगा कि यदि वे इस समस्या को यूं ही छोड़ देते हैं, तो इससे यह और बढ़ जाएगी। कारण जो भी हो, उनकी झूठे शिक्षकों के प्रति ''जीयो और जीने दो'' की नीति प्रभु को पसन्द नहीं थी!

एक नगर जिसमें शीघ्र ही यीशु ने जाना था (2:16, 17)

खतरनाक स भावनाएं

यीशु ने चेतावनी दी, ''सो मन फिरा, नहीं तो मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर, अपने मुख की तलवार से उन के साथ लड़ूंगा'' (आयत 16)।

पिरगमुन के मसीही लोगों को गलत शिक्षा देने वालों का सामना करके उन्हें बदलने की कोशिश करनी आवश्यक थी (यहेजकेल 3:18-21)। यदि झूठी शिक्षा देने वाले बदलने से इनकार कर देते तो उन्हें अपने बीच में से ''निकाल'' देते (1 कुरिन्थियों 5:13; 1 से 12 आयतें भी देखें)। इसके अलावा यह कार्रवाई *तुरन्त* की जानी आवश्यक थी। यीशु की चेतावनी का संकेत यह था कि ''यदि तुम इस मामले को तुरन्त नहीं सुलझाते तो *मैं* शीघ्र आकर इससे निपट लूंगा और फिर तु हें अच्छा नहीं लगेगा!''[36]

यह उन पदों में से है, जिनके शब्दों ''मैं आ रहा हूं'' का अर्थ जगत के अन्त में द्वितीय आगमन नहीं, बल्कि इस जीवन में दुष्टों को दण्ड देने के लिए प्रभु का स्वर्ग से आना है।[37]

प्रभु ने यह नहीं कहा कि उसने न्याय की अपनी भयदायक तलवार का इस्तेमाल कैसे करने की योजना बनाई है, परन्तु हम जानते हैं कि ''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है'' (इब्रानियों 10:31)।

यीशु की चेतावनी ''मैं *तेरे* पास शीघ्र ही आकर अपने मुख की तलवार से *उनसे* लड़ूंगा'' में ''तेरे'' और ''उन से'' में अन्तर पर ध्यान दें। ''तेरे'' शब्द स भवतया पूरी मण्डली के लिए इस्तेमाल किया गया है, जबकि ''उनके'' झूठी शिक्षा फैलाने वालों को कहा गया है।[38] यह तथ्य कि यीशु झूठी शिक्षा देने वालों को दण्ड देने के लिए आ रहा था कलीसिया को उन दण्ड पाने वालों के प्रति चिंतित कर देने वाला होना चाहिए था (गलातियों 6:1)। कलीसिया को *अपनी* सुरक्षा की चिंता भी होनी चाहिए थी। प्रभु द्वारा दुष्टों पर अपनी तलवार चलाने के समय अपने आप को उनसे दूर न रख पाने वालों ने भी बचना नहीं था (यहेजकेल 3:18)। यह तो ऐसा था जैसे यीशु ने कहा हो, ''मैं झूठे शिक्षकों पर बम गिराने वाला हूं; और यदि उस समय तुम वहां हुए तो तुम भी उनके साथ नष्ट हो जाओगे!''

सुधारने वाला अनुशासन[39] कभी आसान नहीं रहा है, परन्तु इसका होना आवश्यक होता है: कलीसिया की शुद्धता के लिए, कलीसिया की प्रतिष्ठा के लिए और उद्धार पाए हुओं को बचाए रखने के लिए यह आवश्यक है।[40]

बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं

सभी पत्रों की तरह इस पत्र में भी यीशु ने कलीसिया के सदस्यों को इसकी व्यक्तिगत प्रासंगिकता बनाने के लिए कहा: ''जिसके कान हो सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है'' (आयत 17क)। उन्हें सुनने और आज्ञा मानने को प्रोत्साहित करने के लिए, यीशु ने विशेष प्रतिज्ञाएं बताईं: ''जो जय पाए उसको मैं गुप्त मन्ना में से दूंगा और उसे एक श्वेत पत्थर भी दूंगा; और उस पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा, जिसे उसके पाने वाले के सिवाय और कोई न जानेगा'' (आयत 17ख, ग)।

प्रतिज्ञा के पहले भाग अर्थात ''गुप्त मन्ना'' का मूल पुराने नियम में है। जंगल में इस्राएलियों के प्रवास के दौरान परमेश्वर उन्हें मन्ना खिलाता था (निर्गमन 16:13-36; भजन संहिता 78:24)।[41] मन्ना का एक पात्र याद दिलाते रहने के लिए कि परमेश्वर ने अपने लोगों को उपलब्ध करवाया था और उनके लिए उपलब्ध करवाता रहेगा (निर्गमन 16:33, 34; इब्रानियों 9:4) वाचा के संदूक में रखा था[42] (और इस कारण ''गुप्त'' था)। इसी प्रकार प्रभु ने पिरगमुन में आज्ञा मानने वालों के लिए प्रबन्ध करना था।[43]

प्रतिज्ञा का दूसरा भाग इतना स्पष्ट नहीं है: ''... और उसे एक श्वेत पत्थर भी दूंगा और उस पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा, जिसे उसके पाने वाले के सिवाय और कोई न जानेगा'' (आयत 17ग)। ''श्वेत पत्थर'' प्राचीन समय के इस्तेमाल होने वाले दो पत्थरों के लिए हो सकता है, जिनमें स्वीकृति या अस्वीकृति को दर्शाने के लिए एक श्वेत और एक काला पत्थर होता था।[44] परमेश्वर का ''श्वेत पत्थर'' दिया जाना परमेश्वर की स्वीकृति

होने के तुल्य था![45]

''वह नया नाम जिसे उसके पाने वाले के सिवाय और किसी को पता नहीं होना था'' क्या था? अगले अध्याय में यीशु ने ''अपना नया नाम'' (3:12) बताया।[46] ''नया नाम'' हो सकता है कि ''यीशु'' ही हो।[47] यदि किसी को आपत्ति हो कि ''यीशु'' नाम में कुछ भी नया नहीं है, तो मेरा उत्तर होगा कि यह उससे प्रेम करने वालों और उसका धन्यवाद करने वालों के लिए हमेशा नया है।

एक नाम है जो मुझे सुनना अच्छा लगता है,
मुझे इसे गाना अच्छा लगता है;
मेरे कानों को यह संगीत सा लगता है,
संसार का सबसे मीठा नाम।[48]

''यीशु'' नाम[49] को सचमुच केवल वही लोग ''जानते'' (समझते और सराहते) हैं, जिन्हें उसके द्वारा उद्धार मिला है (देखें प्रेरितों 4:12)!

सारांश

पिरगमुन की कलीसिया के नाम पत्र यह घोषणा करता है कि मसीही बनना आसान नहीं है। यीशु आज भी ऐसे लोगों की तलाश में है, जो उसे पकड़े रखने का साहस रखते हों, जो हर हाल में विश्वास का इनकार न करें। वह उनकी भी तलाश में है, जो ऐसे भाइयों और बहनों का सामना इतने प्रेम से कर सकते हों जिनके जीवन और शिक्षा ईश्वरीय मानक से मेल नहीं खाते। परमेश्वर समझौते सहन नहीं कर सकता।

यह पत्र हम में से हर किसी को ''विजयी'' बनने की चुनौती देता है: अपनी कायरता पर, अपनी लापरवाही और विश्वास की कमी पर विजयी होने की चुनौती देता है ताकि हम वह बन जाएं जो यीशु चाहता है कि हम बने। यदि हम चाहें तो वह *हमें* भी ''गुप्त मन्ना'' और स्वीकृति का ''श्वेत पत्थर'' देगा।

यदि आपके जीनव में आपकी कोई आत्मिक आवश्यकता है,[50] तो मैं प्रार्थना करता हूं कि वचन की तलवार आपके मन को छूए और आपको *इसी समय* प्रभु की आज्ञा मानने के लिए तैयार कर दे, ताकि वह न्याय की अपनी भयंकर तलवार से आपके साथ कभी न लड़े (मत्ती 25:41)!

सिखाने वालों और प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ के अन्य स भावित शीर्षकों में ''जहां शैतान वास करता था,'' ''जहां शैतान ने अपना सिंहासन रखा था,'' और ''परीक्षा में पड़ी कलीसिया'' हो सकते हैं। अमेरिका में कई बार एक और शीर्षक ''शैतान के स्थान में कलीसिया'' का इस्तेमाल किया जाता है।

टिप्पणियां

[1]नगर को पिरगमुस, पिरगमुम और पिरगमोस भी कहा जाता था। KJV में ''पिरगमोस'' है। [2]''आसिया की सात कलीसियाएं और पतमुस टापू'' वाला मानचित्र देखें। [3]''अक्रोपुलिस'' एक यूनानी मिश्रित शब्द है जिसका अर्थ ''ऊंचा नगर'' है। अक्रोपुलिस पहाड़ पर मूल नगर वाली जगह है। [4]इस वाक्य में यूनानी शब्द के अनुवाद ''रहता'' और ''रहता है'' का अर्थ ''स्थाई निवास होना'' है। [5]KJV में ''सीट'' है, परन्तु यहां ''सीट'' के लिए यूनानी शब्द का इस्तेमाल नहीं हुआ, बल्कि पवित्र शास्त्र में यूनानी शब्द *thronos* है जिससे हमें सिंहासन के लिए अंग्रेज़ी का ''throne'' शब्द मिला है। अध्याय 4 में इसी शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर के सिंहासन के लिए किया गया है। ''सिंहासन'' शब्द ''अधिकार का स्थान'' का संकेत देता है। [6]प्रेरितों 19:35 में *neokoros* का अनुवाद ''मन्दिर का टहलुआ'' हुआ है। [7]अधिकतर नगरों में लोगों को राजा के प्रति अपनी स्वामी भक्ति वर्ष में केवल एक बार दिखानी होती थी; पिरगमुम में दबाव बना रहा होगा। *स्मुरने* की कलीसिया के नाम पत्र में, सताव का आर भ *यहूदियों* द्वारा हुआ था; परन्तु *पिरगमुन* में सताव की धमकी का आदेश *रोमी अधिकारियों* ने दिया होगा। [8]उस क्षेत्र का एक मन्दिर, कृषि की देवी देमेत्र के नाम था। उस मन्दिर के खण्डहरों के पास, पुरातत्व विज्ञानियों को प्रेरितों 17:23 में उल्लेखित शिलालेख जैसी ''अनजाने ईश्वर को'' समर्पित वेदी मिली है। [9]रोमी लोग उसे जुपिटर कहते थे। [10]आज अक्रोपुलिस पर केवल नींव बची है। इस वेदी को बर्लिन के पिरगमुम संग्रहालय में फिर से बनाया गया है। नींव के केन्द्र में से बढ़ते हुए एक विशाल पेड़ को मैदान से स्पष्ट देखा जा सकता है। इसकी उपस्थिति आगंतुकों के लिए पहली शताब्दी की वेदी के दिखाई देने की कल्पना करने में सहायक है। इसे कई मील दूर से देखा जा सकता था।

[11]गेलन को हिपोक्रेटस (460-377 ई.पू.) के बाद दूसरा दर्जा दिया जाता है, जिसे ''औषधि का पितामह'' माना जाता है। गेलन को मानवीय शरीर रचना विज्ञान के क्षेत्र में अपने काम के लिए माना जाता है। उसकी पुस्तकें तेरह शताब्दियों तक इस विषय पर अधिकार के रूप में मानी जाती थीं। [12]मिलने वाले उपचार का वर्णन करते हुए विद्वान लोग ''विश्वास से चंगाई'' और ''आत्म-सुझाव'' जैसे शब्दों को शामिल करते हैं। कई रोग मनोदैहिक (शारीरिक लक्षणों वाली व्याधियां परन्तु उनका मूल कारण मानसिक और भावनात्मक) होते हैं, इस चिकित्सा केन्द्र का ''उपचारों'' में अपना योगदान था। मिलने वाले उपचार के प्रभाव की कई ''गवाहियां'' प्राचीन लेखों में मिल सकती हैं। उसका एक आधुनिक रूप कथित ''विश्वास से चंगाई देने वाले'' होंगे जो अपने प्रचारित ''उपचारों'' और ''गवाहियों'' का इस्तेमाल करते हैं। [13]कुछ उपचार वास्तव में उपयोगी होते थे: खाना, व्यायाम, विश्राम और गरम या ठण्डे पानी से स्नान। [14]यह इस नाम का लातीनी शब्दजोड़ है। यूनानी शब्दजोड़ ''एसक्लेपियास'' है। चिकित्सा केन्द्र को एसक्लेपियुम कहा जाता था। [15]अपनी त्वचा को उतारकर फिर से जवान लगने के कारण सांप स्वास्थ्य के मूर्तिपूजकों का प्रतीक था। आज ी चिकित्सा के पेशे में प्रतीक के रूप में एक छड़ी के गिर्द एक या अधिक सांप लिपटे दिखाए जाते हैं। [16]लामार सी. बैरट, *डिस्कवरिंग द वर्ल्ड ऑफ़ द बाइबल* (नैशविल्ले: थॉमस नैल्सन पब्लिशर्स, 1979), 528. [17]*ग्रोलियर मल्टीमीडिया इन्साइक्लोपीडिया,* 1997 संस्क., s.v. ''परगमुम'' बाय लुईस एल. होरलिंग। [18]पेपिरस नील नदी के निकट उगने वाले पेपिरस पौधे से बनी लिखने की सामग्री थी। ''पेपर'' शब्द ''पेपिरस'' से ही निकला है। [19]चरम पत्र भेड़ों, बकरों और बछड़ों के चमड़े से बनता था। चरम पत्र बनाने की प्रक्रिया में, चमड़े को फैलाकर, उसे कागज़ जितना पतला बनाने तक छीला जाता, फिर उस पर काम होता था। [20]पृष्ठों वाली पुस्तक को ''पांडुलिपि'' कहा जाता था। पिरगमुन के लोगों के साधन सक्षम होने के कारण आप इस पुस्तक पत्री को खोलने के बजाय पन्नों को पलट रहे हैं।

[21]बैरट, 529. [22]मैं यह नहीं कह रहा कि हर उल्लेखित स्थान पूरी तरह से शैतानी है। मैं तो केवल यह कह रहा हूं कि शैतान अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इन में और उनके द्वारा काम करता है। हम परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए इन्हीं क्षेत्रों में काम कर सकते हैं, परन्तु पिरगमुन की तरह हमारे लिए भी यह कठिन होगा। [23]हम आपस में जुड़े सरकारी, शिक्षा और कारोबार के क प्यूटर नेटवर्कों के अन्तरराष्ट्रीय वैब इंटरनेट को जोड़ सकते हैं। [24]कुछ अनुवादों में ''मुझ में तेरा विश्वास'' या इसके जैसा कोई शब्द है, परन्तु

''विश्वास'' यीशु में ''केवल'' विश्वास करने से अधिक व्यापक है। परन्तु दी गई परिभाषा में यीशु में विश्वास *सम्मिलित* है। [25]अनुवादित शब्द ''साक्षी'' का यूनानी शब्द *martus* है, जिससे शहीद के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''martyr'' मिला है। इस शब्द का अर्थ ''जो गवाही देता या प्रमाणित करता है।'' कई बार यूनानी शब्द का अर्थ अपने विश्वास के लिए मरने को तैयार होकर गवाही देने वाले के लिए किया जाता है, जिसे हम शहीद कहते हैं। अन्तिपास अपने विश्वास के लिए मरने को तैयार था, इसलिए KJV में यहां ''मार्टिर'' शब्द लिखा गया है। यही शब्द 17:6 में मिलता है, जहां फिर इसका अर्थ अपनी मृत्यु के द्वारा गवाही देने वालों के लिए है। [26]KJV में ''Slain'' है। यूनानी क्रिया भयंकर मृत्यु का संकेत देती है। [27]एक और उदाहरण इस्तेमाल किया जा सकता है: मान लो कि एक व्यक्ति शारीरिक जांच के लिए डॉक्टर के पास जाता है। जांच के बाद, डॉक्टर उस व्यक्ति को बताता है कि सब ठीक है। फिर वह जोड़ देता है, ''मुझे *कुछ* खराबी पता चली है: आपको शूगर, हृदय की समस्या और कैंसर है।'' [28]यूनानी शब्द के अनुवाद ''ठोकर का कारण'' ''जाल के उस भाग का संकेत है कि जिस पर चारा डाला जाता है। चारा खाने पर, जाल खींच लिया जाता है, जिससे शिकार फंस जाता है'' (होमेर हेली, *रैवलेशन: ऐन इंट्रोडक्शन एण्ड कमैंट्री* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979], 131)। [29]पौलुस ने मूर्तियों को चढ़ाए मांस खाने के प्रश्न पर चर्चा की थी (1 कुरिन्थियों 8-10; रोमियों 14; 15) परन्तु उसकी चर्चा मु यतया पहले मूर्ति को चढ़ाए और फिर बाज़ार में बिके मांस से स बन्धित थी। स्पष्टतया प्रकाशितवाक्य 2:14 वाले पाप में मूर्तिपूजा में भाग लेना शामिल था, जिसकी बिना किसी संकोच के परमेश्वर द्वारा निंदा की गई थी (और है) (2 कुरिन्थियों 6:16; गलातियों 5:20; 1 यूहन्ना 5:21)। [30]यूनानी शब्द के अनुवाद ''व्यभिचार करें'' का मूल अर्थ ''अविवाहितों के शारीरिक स बन्ध'' है (देखें KJV)। मूर्तियों की पूजा में आमतौर पर शारीरिक अनैतिकता शामिल होती है, जिसकी परमेश्वर द्वारा निंदा की जाती थी (और है) (1 कुरिन्थियों 6:13-20)।

[31]आयत 15 में ''वैसे ही'' शब्द दोनों स्थितियों के बीच स बन्ध का संकेत हैं। [32]बिलाम की अपनी मृत्यु तलवार से ही हुई थी (गिनती 31:8)। [33]देखें मीका 6:5. [34]इस पुस्तक में पहले दिए गए निकुलइयों पर नोट्स देखें। [35]परमेश्वर का अनुग्रह हमारे पापों के लिए काफ़ी *है,* परन्तु इसे पाप करने का प्रोत्साहन नहीं माना जाना चाहिए। इस बात पर, रोमियों 6:1 में पौलुस की चर्चा देखें। सच्चे मन फिराव से हम परमेश्वर की सहायता से, अपने जीवनों से पाप को निकालने का प्रयास करेंगे। [36]इसकी तुलना 1 कुरिन्थियों 4:21 में कुरिन्थुस की कलीसिया को दी पौलुस की चेतावनी से करें। [37]''प्रभु का आगमन'' विचार पर दोनों उपयोगों की चर्चा के लिए, इस पुस्तक में पहले आया ''हे प्रभु, कब तक?'' पाठ देखें। [38]और स भावनाएं हैं। उदाहरण के लिए ''उनके'' किसी भी मण्डली के लिए हो सकता है, जिसने झूठे शिक्षकों को अनुशासित करने से इनकार किया। [39]*निरोधक* अनुशासन में सिखाना और प्रशिक्षण देना होता है, जबकि *सुधारने वाले* अनुशासन में गलती सुधारना और दण्ड देना शामिल है। हम ने निरोधक अनुशासन पर अधिक कठोरता से काम किया हो, तो सुधारने वाले अनुशासन की आवश्यकता कम पड़ेगी, परन्तु निरोधक अनुशासन चाहे जितना कठोर हो, कई बार सुधारने वाले अनुशासन की आवश्यकता पड़ ही जाती है। यह घर में भी सत्य है और कलीसिया में भी है। [40]कलीसिया के अनुशासन के कई उद्देश्यों के लिए देखें 1 कुरिन्थियों 5:1, 5-7.

[41]बाइबल विस्तार से नहीं बताती कि मन्ना क्या था, परन्तु निर्गमन 16:15 से यह स्पष्ट पता चलता है कि यह परमेश्वर की ओर से आश्चर्यकर्म से दिया गया प्रबन्ध था। मुझे बताया गया है कि ''मन्ना'' के लिए इब्रानी शब्द का अर्थ (या कम से कम संकेत) ''यह क्या है?'' [42]वाचा का संदूक त बू के परम पवित्र स्थान में रखे सोने से ढके विशेष संदूक को कहा जाता था। संदूक के भीतर तीन चीज़ें थीं: दस आज्ञाओं वाली पत्थर की पट्टियां, मन्ना वाला बर्तन और हारून की छड़ी, जिसमें फूल फल आ गए थे। [43]मन्ना शारीरिक भोज था, इसलिए ''गुप्त मन्ना'' आत्मा का भोजन हो सकता है। कई टीकाकार इस प्रतिज्ञा को यीशु के दावे से जोड़ते हैं कि वह ''जीवन की रोटी'' था (यूहन्ना 6:31, 35)। ''गुप्त'' शब्द से यह संकेत मिल सकता है कि एक मसीही व्यक्ति को मिलने वाली आशिषें संसार से इस अर्थ में *छिपी हुई* हैं कि संसार उन्हें ग्रहण नहीं करता, उन्हें पहचानता नहीं या उनका स मान नहीं करता। [44]यूनानी शब्द का अनुवाद ''पत्थर'' केवल यहीं और प्रेरितों 26:10 में मिलता है। प्रेरितों 26:10 के अन्तिम भाग के मूल अनुवाद ''मैं [मत] का पत्थर डालता हूं''

होगा। आज भी हम ''अपने मत *डालने* '' की बात करते हैं और ''विरोध में मत देना'' का अर्थ आज भी नकारना है। [45]इस के अलावा, बाइबल के समयों में सफ़ेद पत्थरों के और इस्तेमाल भी थे: उनका इस्तेमाल निमन्त्रण के लिए, जैसे प्रतिफल और हिसाब के लिए किया जाता था। कुछ लोगों का विचार है कि सफ़ेद पत्र हीरा था: हीरे कार्बन के ल बी अवधि तक ज़बर्दस्त दबाव में रहने के बाद बनते हैं और पिरगमुन के मसीही ज़बर्दस्त दबाव में ही थे। [46]देखें फिलिप्पियों 2:9, 10. [47]इससे जुड़ी एक स भावना है कि नया नाम ''मसीही'' है (यशायाह 62:2; प्रेरितों 11:26)-या यह नाम 19:12 में उल्लेखित अज्ञात अर्थात वह नाम हो सकता है, जो स्वर्ग में हम पर प्रकट किया जाएगा। [48]एफ़. विटफील्ड, ''ओ हाउ आई लव जीज़स,'' *सौंग्स ऑफ़ द चर्च,* सं. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशर्स, 1977)। [49]''यीशु'' इब्रानी शब्द ''यहोशू'' का यूनानी रूप है, जिसका मूल अर्थ है, ''यहोवा बचाता है।'' [50]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाए, तो बाहरी पापियों को विश्वास करके बपतिस्मा लेने की आवश्यकता (मरकुस 16:16) और भटके हुए मसीहियों को लौटने की आवश्यकता बताएं (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. ''तेज़ दो धारी तलवार'' क्या थी जो यीशु के मुंह से निकली? वचन की तलवार के दो तरह के इस्तेमाल पर चर्चा करें।
2. पिरगमुन की कौन सी कुछ ऐसी बातें थीं, जिन से यह मसीही लोगों के लिए धमकाने वाला बन गया?
3. पाठ में कहा गया है कि पिरगमुन ''एशिया में रोमी सरकार का केन्द्र और राजा की पूजा करवाने के लिए ज़ि मेदार'' था। पिरगमुन में रहने वाले मसीही लोगों पर क्या दबाव होगा?
4. आपको क्या लगता है कि ''शैतान का सिंहासन'' क्या था? यह पाठ क्या सुझाव देता है कि ''शैतान का सिंहासन'' क्या था? क्या शैतान आज भी लोगों को प्रभावित करता है?
5. अंतिपास कौन था? उसके बारे में हम क्या जानते हैं? क्या किसी को जानना ही काफ़ी होता है?
6. बिलाम और बालाक की कहानी बताने को तैयार रहें। बिलाम ने इस्राएलियों का पतन कैसे करवाया?
7. यदि शैतान आज कलीसिया को संसार से मिलवा दे, तो क्या वह कलीसिया का पतन करवा देगा? समझौते के पाप पर चर्चा करें।
8. नीकुलई लोग कौन थे? (इफिसुस की कलीसिया के नाम पत्र वाले पाठ में उनके बारे में जो कहा गया है, उस पर अवश्य विचार करें।)
9. नये नियम के अनुसार झूठे शिक्षकों के साथ क्या व्यवहार किया जाना चाहिए?
10. पिरगमुन की कलीसिया द्वारा झूठे शिक्षकों का सामना न करने के कुछ स भावित कारण क्या हैं? आज कलीसियाएं कलीसिया के अनुशासन को लागू क्यों नहीं करतीं?

11. ''रक्षात्मक अनुशासन'' और ''सुधारवादी अनुशासन'' में क्या अन्तर है ?
12. यीशु द्वारा प्रतिज्ञा किए ''गुप्त मन्ना'' ''श्वेत पत्थर'' ''नया नाम'' आप किसे मानते हैं ? क्या हमें यह जानने के लिए कि यीशु ने हमारे लिए अद्‌भुत आशिषें रखी हैं, इनकी सही-सही समझ होनी आवश्यक है ?